कक्षा में बातचीत होने तो दीजिए!

सुनीता

आमतौर पर कक्षाओं में बच्चों को बातचीत करने की अनुमति नहीं होती। बातचीत को शोर समझा जाता है या शिक्षक की बात की अवहेलना और दोनों ही आमतौर पर अनुशासनहीनता माने जाते हैं। अतः बच्चों की इस स्वाभाविक प्रवृति को पोषित न करते हुए, उन्हें बार-बार चुप रहने को कहा जाता है। अनुभव आधारित यह लेख, भाषा सीखने में बातचीत की अहमियत को दर्शाता है। बच्चों के साथ बातचीत करना क्यों जरूरी है, कक्षा में बच्चों के साथ किन किन मौकों पर, किस किस माध्यम से बातचीत की शुरुआत की जा सकती है, और किस तरह की बातचीत की जा सकती है और बच्चे इस दौरान क्या-क्या सीख सकते हैं इन सभी के बारे में लेख विस्तार से चर्चा करता है। सं.

प्राथमिक स्तर पर भाषा सिखाने के लिए यह अति आवश्यक है कि बच्चों के साथ ज़्यादा से ज़्यादा बातचीत हो। बच्चों के साथ जितनी अधिक और विविध मुद्दों पर बातचीत होगी, उस विषयवस्तु पर उनकी अवधारणाएँ उतनी ही स्पष्ट और पुख़्ता होंगी। बच्चों के साथ बातचीत से ही उनके सन्दर्भों और अनुभवों को कक्षा तक लाया जा सकता है, जो बच्चे की समझ को जानने के लिए शिक्षक को आधार देते हैं। जब बच्चों की भाषा को कक्षा में स्थान और सम्मान मिलता है तो उनका आत्मविश्वास भी बढ़ता है। ऐसा तब अनुभव हुआ जब कक्षा 1 में बच्चों के साथ 'मछली जल की रानी है' कविता पर काम कर रही थी। उस कक्षा की सबसे छोटी लड़की ने कहा कि उसकी थाली से मछली को बिल्ली खा गयी थी। इस बात पर सभी बच्चे हँसने लगे। परन्तु जब बच्चों से इसपर विस्तार से बात हुई, और उस लड़की को विश्वास दिलाया कि वह जो कह रही है वह बिल्कुल ठीक है, तो उसने उस घटना के बारे में विस्तार से बताया कि उस दिन उसके साथ क्या हुआ था। यह अनुभव इस बात की ओर भी इशारा करते हैं कि विद्यालय और कक्षा में बच्चों को खुली बातचीत के लिए अधिक से अधिक अवसर देने पर बच्चों की बातचीत को विस्तार मिलता है और उनमें खुलापन भी आता है।

बच्चों को जब भी बातचीत के मौक़े मिलते हैं तो वे अपने तर्क प्रस्तुत करते हैं, स्वयं अपनी बातचीत का विश्लेषण करते हैं और उसके पक्ष और विपक्ष में अपने विचार रखते हैं। इससे उनमें तर्क करने, विश्लेषण करने की क्षमताएँ भी विकसित होती हैं और सोचने-समझने का नया आयाम मिलता है। इसलिए ज़रूरी है कि बच्चों की बातचीत को अनिवार्य और महत्त्वपूर्ण शिक्षण सामग्री के तौर पर कक्षा में इस्तेमाल किया जाना चाहिए। इसकी शुरुआत इस बात से भी हो सकती है कि वे पिछले दिन स्कूल क्यों नहीं आए थे, स्कूल आते समय रास्ते में क्या-क्या देखा, आदि। यह गतिविधि कक्षा में बच्चों के साथ बातचीत के लिए उपयुक्त वातावरण तैयार करती है और कक्षा की बातचीत में सभी बच्चों की भागीदारी भी सुनिश्चित करती है। इसके साथ-साथ यह बच्चों के व्यक्तिगत अनुभव और स्कूल की पढ़ाई के बीच सम्बन्ध को भी जोड़ती है, जिसकी पैरवी एनसीएफ, 2005 भी करता है

: कक्षाई ज्ञान को बाहरी ज्ञान से जोड़ना।

पिछले तीन वर्षों में कुछ एक प्राथमिक विद्यालयों में काम करने के दौरान हिन्दी भाषा की कक्षाओं में बच्चों और शिक्षकों के साथ जुड़ना हुआ। इस दौरान ख़ासकर यह देखने को मिला कि बच्चों की बातचीत और शामिलियत को कक्षा में बहुत कम तवज्जो दी जाती है। शायद इसके पीछे यह मान्यता होगी कि इतने छोटे बच्चों के साथ क्या बातचीत करेंगे क्योंकि वे तो दिन भर बात ही करते हैं, अगर कक्षा में भी बात ही करेंगे तो पढ़ेंगे कब? किन्तु जब बच्चों के साथ घुलना-मिलना हुआ, तब मैंने पाया कि दरअसल बच्चे अधिकांश समय अक्षर, मात्राओं, शब्दों और पाठ में दिए प्रश्न-उत्तरों में ही व्यस्त रहते हैं। इस प्रक्रिया में उनसे जो पूछा जाता है, वे उसी का जवाब देते हैं।

बच्चों से बातचीत के महत्त्व और उपयोगिता को और गहराई से जानने-समझने के लिए अगर पिछले कुछ वर्षों के सेवारत शिक्षक प्रशिक्षण के मॉड्यूलों पर नज़र डाली जाए, तो यह देखने को मिलेगा कि उनमें भी बच्चों के साथ बातचीत का महत्त्व, उपयोगिता और कक्षा में बरतने के तरीक़ों को लेकर ख़ूब चर्चा हुई है। पर आज भी यदा कदा ही देखने को मिलता है कि बातचीत को कक्षा में एक महत्त्वपूर्ण और उपयोगी शिक्षणशास्त्र के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा हो।

'बच्चे की भाषा और अध्यापक' किताब में प्रो. कृष्ण कुमार लिखते हैं, "जो अध्यापक बच्चों को बातचीत करने से रोकते हैं, उन्हें शिक्षण सामग्री की कमी की शिकायत करने का कोई हक़ नहीं है। वे पहले ही ऐसे बेशक़ीमती साधन को बेकार जाने दे रहे हैं, जिसके लिए कोई पैसा ख़र्च नहीं करना पड़ता। इसलिए ऐसा स्कूल जहाँ छोटे बच्चे बात करने को स्वतन्त्र नहीं, बड़ा फ़िज़ूलख़र्च स्कूल कहलाएगा।" प्रो. कृष्ण कुमार की यह बात बच्चों की बातचीत को एक महत्त्वपूर्ण शिक्षण सामग्री के रूप में इस्तेमाल करने की सलाह देती है, जो बिना किसी अतिरिक्त व्यय के एक उपयोगी 'शिक्षण सहायक सामग्री' है।

बच्चों के साथ बातचीत रोचक और महत्त्वपूर्ण प्रश्नों के हल तलाशने में भी हमारी सहायता करती है। इस बात की पुष्टि गैरथ बी. मैथ्यूज़ के उस विचार से होती है जिसे उन्होंने अपनी किताब बच्चों से बातचीत में लिखा है। मैथ्यूज़ के अनुसार बच्चों के साथ सार्थक बातचीत की जाए तो वे स्वयं चीज़ों की पड़ताल करेंगे और सही व ग़लत के निष्कर्ष पर पहुँचेंगे। वे यह भी लिखते हैं कि वयस्क कभी बच्चों से उन विषयों पर बातचीत नहीं करते हैं जो उन्हें स्वयं कठिन और समस्याग्रस्त लगते हैं। बच्चों को ज्ञान की तलाश है और इसके लिए वे समझदारी भरे और प्रेरक प्रश्न पूछते हैं। जब तक उनकी ज्ञान की भूख शान्त नहीं हो जाती तब तक वे इन प्रश्नों को लगातार पूछते हैं; परन्तु जब उन्हें लगता है कि उनके चारों ओर के वयस्कों को उनकी बात सुनने की या उनके विचार जानने की कोई इच्छा नहीं है, तो वे प्रश्न पूछना बन्द कर देते हैं।

> बच्चे अपने अलग-अलग उद्देश्यों के लिए अलग-अलग प्रकार की बातचीत करते हैं, और यह ज़रूरी नहीं कि सभी उद्देश्य शिक्षक के लिए आवश्यक ही हों। परन्तु बच्चों की इस बातचीत को विस्तार देने और वातावरण बनाने के लिए यह आवश्यक है कि कक्षा में हर बच्चे को यह विश्वास दिलाया जाए कि जब वह बोलेगा तो उसे सुना जाएगा। बच्चे यह भी महसूस करें कि उनका बोलना अध्यापक को अच्छा लगता है।

मेरी समझ में बच्चों को प्रश्न पूछने से रोकना या उनकी बात की अवहेलना करना बहुत बड़ी क्षति है, जो बच्चों को जिज्ञासु होने से रोकती है और उनके सीखने की प्रक्रिया में नीरसता पैदा करती है। इससे बच्चों और अध्यापक के बीच एक गहरी खाई पैदा हो जाती

है। बच्चों को बोलने की मना ही करने से और बातचीत के मौक़े न देने से वे सीखना कम कर देते हैं। इस बात की पैरवी गिजुभाई बधेका और जॉन हॉल्ट ने भी की है।

बच्चों के साथ काम करने के दौरान मुझे यह अनुभव हुआ कि बच्चे अपने अलग-अलग उद्देश्यों के लिए अलग-अलग प्रकार की बातचीत करते हैं, और यह ज़रूरी नहीं कि सभी उद्देश्य शिक्षक के लिए आवश्यक ही हों। परन्तु बच्चों की इस बातचीत को विस्तार देने और वातावरण बनाने के लिए यह आवश्यक है कि कक्षा में हर बच्चे को यह विश्वास दिलाया जाए कि जब वह बोलेगा तो उसे सुना जायेगा। बच्चे यह भी महसूस करें कि उनका बोलना अध्यापक को अच्छा लगता है। इससे बच्चे अपनी बात को खुलकर रख सकेंगे। इसके अलावा, यह बातचीत बच्चों को कक्षा से जोड़ने एवं पाठ के सन्दर्भ पर लाने और उनके पूर्व ज्ञान को कक्षा में शामिल करने में एक महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकती है।

पहली बार जब कक्षा 1 व 2 में बच्चों के साथ बातचीत पर काम शुरू करने की योजना बनाई तो इसकी शुरूआत बच्चों को जानने-समझने से हुई। कक्षा में जाने के बाद बच्चों से कहा, "आज हम अपने बारे में बातचीत करेंगे कि कौन कहाँ से आता है? आपके घर में कौन-कौन रहते हैं? आपके माता-पिता क्या काम करते हैं? आपको क्या अच्छा लगता है? आप लोग कौन-कौन से खेल खेलते हो?" इत्यादि। इन बातों को सुनकर बच्चों ने ऐसे देखा कि जैसे मैंने कोई अनोखी बात कह दी हो। कक्षा में बातचीत को एक महत्त्वपूर्ण शिक्षण पद्धति के रूप में इस्तेमाल किए जाने से सम्बन्धित इस गतिविधि की शुरुआत में तो बच्चे बातचीत में बहुत ज़्यादा शामिल नहीं हुए, और बातचीत एक स्तर तक जाने के बाद बन्द हो जाती थी।

बातचीत बन्द होने के कारणों पर लगातार काम करना पड़ा। जब बच्चों के जवाबों को ही प्रश्न बनाना शुरू किया, तो धीरे-धीरे बच्चों ने भी बातचीत को कक्षा शिक्षण का हिस्सा मान लिया। इस काम के द्वारा बच्चों को गहराई से जानना-समझना हो पाया। इससे यह भी पता चला कि कुछ बच्चे तो ऐसे हैं जिनके माता-पिता उन्हें सोता हुआ छोड़कर काम पर चले जाते हैं—ऐसे में अगर उनकी नींद समय से खुल गई तो, और स्कूल आने का मन हो गया तो, वे आ गए और नहीं हुआ तो नहीं आए। जिन बच्चों के साथ यह समस्या थी, उनकी कक्षा में उपस्थिति भी अच्छी नहीं थी। कक्षा 2 में पढ़ने वाली लड़कियों ने बताया कि उन्हें सुबह खाना बनाकर स्कूल आना होता है, क्योंकि माता-पिता दोनों काम पर जाते हैं और इस कारण स्कूल आने में देर हो जाती है; देर से आने पर डाँट या मार पड़ने के डर से वे स्कूल नहीं आती हैं। कुछ बच्चों की माताएँ झाड़ू-पोछा का काम करके घर सम्भालती हैं, वे कहाँ से रोज़ कॉपी-पेन्सिल लेकर आएँ। बच्चों के सन्दर्भों को जानने-समझने के बाद इस पर बच्चों और शिक्षिका से बातचीत हुई कि अगर उन्हें स्कूल आने में थोड़ी देर हो जाए तो उन्हें इसकी अनुमति दे दें। इससे बच्चों का पोर्टफ़ोलियो बनाने में काफ़ी मदद मिली, जैसे—उनकी पारिवारिक एवं आर्थिक स्थिति कैसी है, उनकी रुचि किस चीज़ में है और उनके साथ घर में कैसा बर्ताव किया जाता है। इससे कक्षा के बच्चों के प्रति संवेदना उत्पन्न हुई और इसके बाद बच्चों के साथ काम करने का नज़रिया ही बदल गया।

कविता के माध्यम से बातचीत के अवसर

बच्चों के साथ कविताओं पर काम करने के दौरान यह देखने को मिला कि बच्चों के अनुभवों को जोड़ा जाए तो वे सक्रिय प्रतिभागिता करते हैं और कविता से जुड़ पाते हैं। इसके लिए कुछ के कविताओं के अनुभव इस प्रकार रहे—कविता 'बारिश आई छम-छम-छम' पर काम करने से पहले बच्चों के साथ बारिश, बादल, छाता, लड़की आदि पर बातचीत हुई कि यह हमने कहाँ-कहाँ देखे हैं। बच्चों ने बताया कि उन्हें बारिश में भीगने में मज़ा आता है; बारिश में नाव चलाना अच्छा लगता है; विशाल को बारिश

में साइकिल चलाना अच्छा लगता है; कुछ और बच्चों को भी बारिश में साइकिल चलाना अच्छा लगता है; अंजलि को बारिश पसन्द नहीं है, आदि। उन्होंने यह भी बताया कि बारिश के दौरान स्कूल में पानी भर जाता है तो अच्छा नहीं लगता है क्योंकि कीचड़ हो जाता है तो खेलने को नहीं मिल पाता है।

कुछ बच्चों ने बारिश से जुड़े अपने अनुभव भी साझा किए। राहुल ने बताया कि वह एक बार मैदान में पानी में गिर गया था और उसके कपड़े ख़राब हो गए थे। दिव्या ने बताया कि उसे बारिश में नहाना अच्छा लगता है। हेमपुष्पा ने बताया कि उसके घर में पानी आ जाता है तो उसे अच्छा नहीं लगता है। ऐसे ही अन्य शब्दों बादल, छाता, लड़की आदि पर भी बच्चों से बात हुई। बातचीत के बाद कविता को हावभाव से गाना, कविता पर बच्चों से बात करना, चित्र बनाना, चित्रों में रंग भरना और ध्वनियों पर काम करना, आदि आगे के काम हुए।

ऐसे ही एक अन्य कविता पर काम करने के दौरान भी अनुभव हुआ। कविता थी 'एक छोटी सी किश्ती मेरे पास'। इस पर काम करने से पहले बच्चों को नाव का चित्र दिखाया। बच्चे 'नाव' शब्द से तो परिचित थे, परन्तु कविता में 'किश्ती' शब्द से परिचित नहीं थे। कविता पर बच्चों के साथ काम करने के बाद लगभग सभी बच्चे 'किश्ती' से परिचित हो पाए। बच्चों ने यह भी बताया कि 'किश्ती' को नाव, बोट और नौका भी कहते हैं। साथ ही उन्होंने नाव से जुड़े अपने अनुभव भी साझा किए। कुछ बच्चों ने बताया कि जब वे नैनीताल घूमने गए थे, तब वहाँ उन्होंने नाव देखी थी; कुछ बच्चों ने बताया कि उन्होंने गूलरभोज डैम में नाव देखी है। लोग नाव में बैठकर सैर भी करते हैं और मछली भी पकड़ते हैं। बच्चों के अनुभवों को श्यामपट्ट पर लिखने से फ़ायदा हुआ: बच्चे समझ पाए कि जो बात वे बताते हैं, वह भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण है जितनी किताब में लिखी बात महत्त्वपूर्ण होती है।

कहानी के माध्यम से बातचीत के अवसर

कक्षा 1 में बच्चों के साथ इल्ली और तितली की कहानी पर काम किया। छोटे बच्चों के हिसाब से यह बहुत बड़ी अवधारणा है कि इल्ली से तितली कैसे बनी, पर जब बच्चों के साथ चित्र-कहानी के माध्यम से इस पर बातचीत करना शुरू किया तो लगभग सभी बच्चे यह समझ रहे थे कि इल्ली से तितली कैसे बनती है। बच्चों को इल्ली का चित्र दिखाया, तो कुछ बच्चों ने बताया, "मैडम, यह तो वही कीड़ा है जो घास में रहता है और पत्ता खाता है।" इसके बाद दूसरी कहानी 'घर' पर काम करने के दौरान बच्चों ने कहा, "मैडम, इल्ली का घर भी घास में होता है और वह घास खा-खाकर हरी हो जाती है।" फिर, कुछ दिनों के बाद विद्यालय के प्रांगण में खूब सारी इल्लियाँ आ गईं, तो बच्चे एक दूसरे को खींच-खींचकर क्यारियों के पास ले जा रहे थे और कह रहे थे, "देखो... हमने इल्ली की कहानी सुनी थी वैसी ही इल्ली है..." यहाँ तक कि हर बच्चा मुझे आकर यह बता रहा था, "मैडम, हमने सचमुच की इल्ली देखी है!" बच्चों की बातचीत से समझ आया कि वे अगर किसी बात को ठीक तरह से समझते हैं तो उसको अपने आगे की बातचीत में भी शामिल करते हैं, और ऐसे ही कहानियों के तार आगे की कहानियों से जुड़ते हैं।

चित्रों के माध्यम से बातचीत के अवसर

बातचीत के लिए चित्र, एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसके लिए कक्षा 1 की पाठ्यपुस्तक हँसी-ख़ुशी से 'घर' चित्र-पाठ चुना गया और उस पर पाठ योजना तैयार की गई। बच्चों से पाठ में दिए चित्रों पर बातचीत हुई। बच्चों को पूछा कि उन्हें चित्र में क्या-क्या दिख रहा है? बच्चों ने बताया कि जानवर, घर, आदमी, बच्चे, पेड़, चिड़िया, घोसला, चिड़िया के बच्चे, पहाड़, फूल, नदी आदि दिखाई दे रहे हैं। इसके बाद बच्चों के साथ 'घर' को लेकर बात हुई कि 'घर क्या होता है?' इस पर बच्चों ने

बहुत ज़्यादा जवाब तो नहीं दिए– वे केवल यही बता पाए कि जहाँ हम और मम्मी पापा रहते हैं, घर में खेलते भी हैं, आदि। बच्चों के अनुभवों को सुनने के बाद उनसे पाठ में बने चित्रों के बारे में बातचीत हुई– इनमें किस-किसके घर के चित्र बने हुए हैं? चिड़िया का घर कहाँ है– सभी ने कहा, "पेड़ पर!" फिर, चर्चा हुई कि अगर कोई चिड़िया मकान में या आले या कहीं और रहती है तो उसको क्या कहेंगे, और वह वहाँ क्यों रहती है। कुछ बच्चों को समझ में आ गया कि जैसे हमारा घर मकान है वैसे ही चिड़िया का घर उसका घोसला होता है, गाय का घर गौशाला होता है और ऐसे ही मछली का घर पानी में होगा। चित्रों पर बात करने के बाद बच्चों ने घर और पेड़ पर चिड़िया के घोसले का चित्र बनाया। सभी बच्चों को यह भी समझ में आ गया था कि जो जहाँ रहते हैं, वह उनका घर होता है। जैसा चित्र में भी दिखाई दे रहा था। इस बातचीत के बाद मुझे महसूस हुआ कि बच्चों को यह अवधारणा समझ में आ गई थी कि घर क्या होता है।

छुट्टियों के अनुभवों के माध्यम से बातचीत के अवसर

बच्चों के साथ उनके अवकाश के दिनों के बारे में भी बात करना ज़रूरी है क्योंकि वे जब लम्बी छुट्टियाँ बिताकर स्कूल आते हैं, तो बहुत उत्सुक रहते हैं कि शिक्षक उनसे पूछे कि उन्होंने अपनी छुट्टियाँ कैसे बिताईं। यह एक अच्छी गतिविधि रहती है, जिसमें बच्चों से उनकी छुट्टियों पर बात की जाए। गर्मियों की छुट्टियों के बाद जब स्कूल खुला तो सभी को यह काम दिया गया कि वे छुट्टियों के अपने-अपने समय के बारे में लिखेंगे– गर्मी की छुट्टी कैसे बीती? किसने क्या-क्या किया? कहाँ-कहाँ घूमने गए? इत्यादि। बच्चों ने अपने अनुभवों को लिखकर दर्ज किया। जिन्हें लिखना नहीं आता था, उन्होंने चित्र बनाकर और मौखिक तौर पर बताया।

रोहित दिल्ली गया था तो उसने दिल्ली में कमल मन्दिर देखा और बहुत जगह घूमने गया और रेस्टोरेण्ट में खाना भी खाया–यह सभी को बताया और फिर उसको लिखा। मनीषा कोलकाता गई थी तो उसने कोलकाता के बारे में और अपनी मौसी की बेटी की शादी के बारे में बताया। नीरज कक्षा 2 में पढ़ती है। वह जब भी कुछ लिखती है तो उसमें घर का काम और घर में अक्सर मार पड़ने का ज़िक्र ज़रूर होता है। राजकुमार और कुछ बच्चों ने एक सड़क दुर्घटना के बारे में बताया, जिसमें एक बस और बोलेरो की टक्कर हो गई थी और बसवाला बस छोड़कर भाग गया। बोलेरोवाला लगभग एक घण्टे तक तड़पता रहा, पर उसे कोई अस्पताल नहीं ले गया और उसने वहीं पर दम तोड़ दिया।

इसके बाद, बच्चों से बात की गई कि सड़क पर सतर्क होकर चलना चाहिए। अगर किसी भी तरह की सड़क दुर्घटना देखें, तो तुरन्त 108 को फ़ोन करना चाहिए। बच्चों से इन सारे विषयों पर बातचीत की जानी चाहिए, जिससे वे समाज के संवेदनशील, जागरूक और ज़िम्मेदार नागरिक बन सकें। सर्दियों की छुट्टियों के बाद भी बच्चों ने अपने अनुभव बताए। इस बार छुट्टियों को लेकर बच्चों का कहना था कि इतने दिन की छुट्टियाँ नहीं होनी चाहिए, वे घर पर बोर हो जाते हैं और इतनी ठण्ड में घर का काम भी करना पड़ता है।

मान्यताओं के माध्यम से बातचीत के अवसर

बच्चों के साथ बातचीत में उन्हें यह विश्वास दिलाना पड़ता है कि वे जो भी जानते हैं, उसमें सही और ग़लत दोनों ही बातें हो सकती हैं। कई बार बच्चे सुनी-सुनाई बातों पर बहुत अधिक विश्वास कर बैठते हैं– उन्हें लगता है कि वे जो कह रहे हैं वह बिल्कुल सही है। दिसम्बर 2016 में, क्रिसमस के आसपास सभी कक्षाओं के बच्चे मेरे पास आए और एक काग़ज़ दिखाकर कहने लगे, "मैडमजी, इसमें हस्ताक्षर कर दो!" जब मैंने उनकी कॉपी देखी तो उसमें बच्चों ने अपने सहपाठियों, अपने आसपास के लोगों और कुछ शिक्षकों के हस्ताक्षर करवाए थे। जब बच्चों

से पूछा कि तुम्हें यह हस्ताक्षर क्यों चाहिए, तो बच्चों ने बताया कि वे इन्हें क्रिसमस की रात तकिये के नीचे रखेंगे, जिससे सैण्टाक्लॉज़ आएगा और उनकी जो भी इच्छा होगी वह पूरी कर देगा; इसलिए जितने ज़्यादा हस्ताक्षर होंगे उतना अच्छा है।

यह बात सुनने में तो बहुत सामान्य सी लगती है कि बच्चे तो ऐसा करते ही हैं, परन्तु बच्चों से इस तरह की मान्यताओं पर बात करना ज़रूरी हो जाता है। उस समय तो मैंने बच्चों को मना कर दिया और कहा कि जब मैं कक्षा में आऊँगी तब हम इस पर बात करेंगे और तब मैं हस्ताक्षर भी कर दूँगी। यह कक्षा 3 के बच्चे थे। जब उनकी कक्षा में जाना हुआ तो मैंने सैण्टाक्लॉज़ पर बात से कक्षा की शुरुआत की। बच्चों से पूछा, "जो आपने कहा, क्या वह सचमुच होता है? कौन-कौन मानता है कि सैण्टाक्लॉज़ होता है? अभी तक कितने बच्चों के साथ ऐसा हुआ कि आप क्रिसमस की सुबह उठे और आपको गिफ़्ट मिले हों? या आपकी कोई इच्छा पूरी हुई हो?" इस पर बच्चों ने बताया कि उनके दोस्त कह रहे थे कि उन्हें मिला है। जब यह बात हुई कि उनमें से किसी को मिला होतो बताएँ, तब ज़्यादातर दूसरों का ज़िक्र करने लगे कि यह कह रहा था, वह कह रहा था। जब मैंने उनसे पूछा कि क्या गिफ़्ट मिलता है, तो बच्चों ने कहा कि चॉकलेट, टॉफ़ी, खिलौने आदि। फिर दूसरा सवाल किया कि सैण्टाक्लॉज़ कहाँ से यह सबकुछ लेकर आता है, तो कुछ बच्चों का कहना था कि फ़ैक्ट्री से लेकर आता है और आसमान से नीचे फेंकता है, आदि। कभी-कभी तो बच्चे मनगढ़न्त बातें भी बताने लगते थे। फिर, आपस में ही कुछ बच्चों का कहना था कि ऐसा कुछ नहीं होता है, सैण्टाक्लॉज़ के वेश में कोई इंसान ही होता है। अगर वो आसमान से गिफ़्ट फेंकेगा तो गिफ़्ट टूट भी सकता है।

इसके बाद, हमने त्यौहारों पर बातचीत करते हुए यह चर्चा की कि जैसे हम दीपावली या कोई और त्यौहार मनाते हैं, वैसे ही इसाई समुदाय के लोग क्रिसमस मनाते हैं। वे जिनसे प्यार करते हैं उन्हें गिफ़्ट देते हैं, ख़ुशियाँ मनाते हैं, आदि। हमारे मम्मी-पापा भी हमसे प्यार करते हैं और हमें कुछ गिफ़्ट करते हैं, तो क्या वे भी हमें ऐसा कहते हैं कि पहले 100 लोगों के हस्ताक्षर करके लाओ, फिर आपको गिफ़्ट मिलेगा। फिर बच्चों से बात हुई कि हमने जो भी सुना है उसका मतलब यह क़तई नहीं है वह सब सही हो। जो भी आपसे इस बारे में बात करता है उससे पूछो, बात करो और फिर वही करो जो आपको सही लगता है। इस बात पर सभी बच्चे सहमत थे।

> बच्चों के साथ बातचीत के लिए ज़रूरी है कि हमारी पूर्व-योजना हो : हमें बच्चों के साथ क्या बात करनी है, सवालों की प्रकृति कैसी हो, सवालों में खुलापन हो और बच्चों के जवाबों को सवाल में बदला जाए ताकि बातचीत को विस्तार दिया जा सके। इससे बातचीत को दिशा देने में मदद मिलती है।

बच्चों के साथ बातचीत के बाद मैंने महसूस किया कि अगर उनकी इन मान्यताओं को चुनौती दी जाए तो उन्हें सोचने का नया नज़रिया मिलता है। बातचीत को कक्षा शिक्षण का माध्यम बनाने से बच्चों को कक्षा शिक्षण से जोड़ने में काफ़ी मदद मिल पाई और सीखना सार्थक हो सका। छोटी कक्षाओं के बच्चों के मामले में यह भी ज़रूरी हो जाता है कि वे कक्षा में जो भी करते हैं उसमें उन्हें सीखने के साथ-साथ ख़ुशी भी मिले।

कक्षा में बच्चों के साथ बातचीत के लिए सम्भावित रूपरेखा इस प्रकार हो सकती है–

- बच्चों के साथ बातचीत के लिए ज़रूरी है कि हमारी पूर्व-योजना हो : हमें बच्चों के साथ क्या बात करनी है, सवालों की प्रकृति कैसी हो, सवालों में खुलापन हो और बच्चों के जवाबों को सवाल में बदला जाए ताकि

बातचीत को विस्तार दिया जा सके। इससे बातचीत को दिशा देने में मदद मिलती है।

- बच्चों के साथ उनके अनुभवों, सन्दर्भों पर बातचीत करनी चाहिए। इससे बच्चे संवाद के साथ जुड़ते हैं और अपने तर्क प्रस्तुत करते हैं। जब बच्चों को सन्तोषजनक जवाब नहीं मिल पाता तो वे चर्चा में शामिल नहीं होते हैं।
- बच्चों के साथ रिश्ता भी बातचीत की एक प्रमुख आधारशिला हो सकती है। जब बच्चों के साथ रिश्ता गहरा होता है तो बच्चे बिना झिझक शिक्षक के पास अपनी समस्याओं के समाधान के लिए आते हैं, जिससे आगे की बातचीत शुरू की जा सकती है।
- कक्षा में बच्चों के परिवेश पर बातचीत करने से उनकी भाषा समृद्ध होती है और उन्हें एक दूसरे के अनुभवों से सीखने के मौक़े मिलते हैं। जब एक दिन बच्चों ने काग़ज़ बनने की प्रक्रिया पर कक्षा में चर्चा की, तो उनसे इस बारे में अपने आसपास से पता करके आने को कहा गया। काग़ज़ कैसे बनता है– इससे जुड़ी सभी जानकारी बच्चे स्वयं ही जुटा कर लाए थे। अतः, कक्षा में परिवेश पर बातचीत भी एक महत्त्वपूर्ण औज़ार हो सकता है।
- बच्चे जब किसी भी समस्या के विभिन्न पहलुओं से परिचित होते हैं तो उनमें अपनी बात दूसरों तक पहुँचाने व दूसरों की बात सुनने की क्षमता बढ़ती है और साथ ही उनका शब्द भण्डार भी बढ़ता है। यानी किसी भी समस्या के विभिन्न पहलुओं से भी बातचीत की शुरुआत की जा सकती है।

अतः, कक्षा शिक्षण के अनुभव से यह समझ बनी कि बच्चों के साथ बातचीत एक प्रभावकारी 'शिक्षण सहायक सामग्री' है, जिसे कक्षा में भरपूर उपयोग किया जाना चाहिए। वैसे तो हर कक्षा, भाषाई दृष्टि से, मौखिक भाषा से हमेशा ही लबरेज़ होती है, किन्तु हम उसका सार्थक उपयोग कैसे करें यह समझने की ज़रूरत है– यानी मौखिक भाषा को बातचीत के रूप में बदलते हुए, कक्षा में बच्चों के सीखने की चुनौतियों को कम करने की दिशा में प्रयास किया जाए। कक्षा में बातचीत के द्वारा बच्चों को किसी विषय पर तर्क-वितर्क करने के पूरे मौक़े भी देने चाहिए, जिससे उनकी मान्यताओं को चुनौती मिले, वे सही-ग़लत का निर्णय करने में सक्षम हो पाएँ और संवैधानिक मूल्यों को समझने की कोशिश कर पाएँ।

सन्दर्भ

हॉल्ट, जॉन (2006), *असफल स्कूल* (हिन्दी रूपान्तरण), एकलव्य प्रकाशन।

बधेका, गिजू भाई, *दिवास्वप्न*, बाल कल्याण समिति।

मैथ्यूज़, गैरथ बी. (1996), *बच्चों से बातचीत,* ग्रन्थ शिल्पी प्रा.लि.।

कृष्ण कुमार (2008), *बच्चे की भाषा और अध्यापक*, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली।

सेवारत शिक्षक-प्रशिक्षण मॉड्यूल 2012-13, सरोकार।

सेवारत शिक्षक-प्रशिक्षण मॉड्यूल 2014-15, मंथन।

सेवारत शिक्षक-प्रशिक्षण मॉड्यूल 2016-17, अर्जन।

एनसीएफ, 2005।

रिमझिम : भाग 2 (2010), कैसे पढ़ाएँ, शिक्षक संदर्शिका, एनसीईआरटी।

सुनीता दो दशक से भाषा शिक्षण के क्षेत्र में सक्रिय हैं। वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में उत्तराखण्ड के उधम सिंह नगर में भाषा स्रोत व्यक्ति के रूप में कार्यरत हैं।
सम्पर्क : sunita1@azimpremjifoundation.org